Review Of Research
Vol.1, Issue. 8 , May . 2012
ISSN:-2249-894X Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

हिंदी भाषा, लिपि और व्याकरण

आनंदा मारुती कांबळे
आनंदीबाई रावराणे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वैभववाडी (सिंधुदुर्ग), महाराष्ट्र.

भाषा क्या है?

भाषा मूलतः ध्वनिसंकेतों की- एक व्यवस्था है, यह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, यह विचारों के आदानप्रदान का एक सामाजिक साधन है और इसके शब्दों के अर्थ प्रायः रूढ़ होते हैं। भाषा अभिव्यक्ति का एक - ऐसा समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट कर सकता है और दूसरोंं के विचार जान सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि 'भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त ध्वनि संकेतों की व्यवस्था ही भाषा है।'

प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा होती है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है। संसार में अनेक भाषाएँ हैं। जैसे - हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, बँगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, फ्रैंच, चीनी, जर्मन इत्यादि।

भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है| इसका अर्थ है 'बोलना'| बोलने की प्रक्रिया मनुष्य के अस्तित्व के साथ जुडी है| आदिकाल में मनुष्य संकेतो तथा अस्पष्ट ध्वनियो से अपनी बात एक दुसरे तक पहुँचाते थेजब सभ्यता का विकास हुआ |साथ हुआ है -भाषा का विकास मानव सभ्यता के विकास साथ | औरउसने परिवार की संरचना की तथा बस्तियाँ बनाकर रहना सिखा तो उसे एक साधन की आवश्यकता पड़ी जिससे वह अपने भावो और विचारों का आदानमनुष्य की इस आवश्यकताने भाषा को जन्म |प्रदान कर सके - |दुसरे तक पहुँचाने के लिए भाषा का सहारा लियामनुष्य ने अपने भावो और विचारों को एक :अत |दिया भाषा |प्रदान करने के लिए भाषा का विकास किया गया-हम कह सकते है कि भावों और विचारों का आदान:अत के रूप को स्थिररखने के लिए कुछ नियम भी बनाए गए साथ भाषा विकसित होती रही -इननियामो के साथ | आज जो भाषा हम बोलते है वह हजारो वर्षों से चली आ रही |साथ इसमे परिवर्तन होते रहे-तथा समय के साथ |यह भाषा का परिमार्जित रूप है :अत |है

- **भाषा के प्रकार-**

भाषा दो प्रकार की होती है -
१. मौखिक भाषा।
२. लिखित भाषा।

आमनेसामने बैठे व्यक्ति परस्पर बातचीत करते हैं अथवा कोई व्यक्ति भाषण आदि द्वारा अपने विचार - प्रकट करता है तो उसे भाषा का मौखिक रूप कहते हैं।

जब व्यक्ति किसी दूर बैठे व्यक्ति को पत्र द्वारा अथवा पुस्तकों एवं पत्रपत्रिकाओं म-ें लेख द्वारा अपने विचार प्रकट करता है तब उसे भाषा का लिखित रूप कहते हैं।

१. मौखिक भाषा-:

हम जो कुछ बोलते है' उसे बोली जाने वाली भाषा को,मौखिक भाषा |कहते है 'मौखिक भाषा के उदाहरण है |विविदम गायन आदि-वाद ,वार्तालाप ,समाचारवाचक -मौखिक भाषा अस्थायी होती है परंतु इस भाषा को | |स्थायी रखने के लिए कैसेट्स का प्रयोग किया जाता है

२. **लिखित भाषा-:**

' इसे |वह भाषा का लिखित रूप होता है ,जिन शब्दों को हम लिखकर प्रस्तुत करते हैलिखित भाषा ' लिखे लोग ही-लिखित भाषा को पढ़े |पत्र आदि भाषा के लिखित रूप है ,पुस्तके |कहते हैप्रयोग करते हैइसके | भाषा के लिखित रूप से ही आज भीहम अपना इतिहास जानने में सक्षम |दवारा हम ज्ञान का संचय का करते हैं | है'लिखित भाषा का विकास 'मौखिक भाषाभाषा का लिखित रूप ही |के विकास के बहुत बाद में हुआ है ' |भाषा को स्थिर बनता हैं

- **बोली**:

बोली एक सिमित क्षेत्र में बोली जाती हैबोली |बीस किलोमीटर के बाद बोली कारूप बदल जाता है-पंद्रह | बोली में जब साहित्य रचना |जाती है (उच्चरित की) यह केवल बोली |में कोई भी साहित्यिक रचनाएँ नहीं होती ब्रज और अवधी दोनों ब्रज तथा -जैसे |तब बोली उपभाषा बन जाती है ,होने लगती है अवध की क्षेत्रीय भाषाएँ हैं | 'रामचरित मानस' की रचना की हैं तथा तुलसीदास ने अवधी भाषा में 'सूर सागर' परंतु सूरदास ने ब्रज भाषा में |जिसके कारण ये दोनों बोलियाँ उपभाषाएँ बन गई और अब ये भाषा कहलाती हैं |की रचना की है

जिस क्षेत्र का आदमी जहाँ रहता है, उस क्षेत्र की अपनी एक बोली होती है। वहाँ रहने वाला व्यक्ति, अपनी बात दूसरे व्यक्ति को उसी बोली में बोलकर कहता है तथा उसी में सुनता है। जैसेझुन्झुनू) शेखावाटी-, चुरू व सीकर के निवासी (शेखावाटीङ बोली में कहते हैं एवं सुनते हैं। इसी प्रकार कोटा और बूँदी क्षेत्र के निवासी हाड़ौतीङ में; अलवर क्षेत्र के निवासी मेवातीङ में; जयपुर क्षेत्र के निवासी ढूँढाड़ीङ में; मेवाड़ के निवासी मेवाड़ीङ में तथा जोधपुर, बीकानेर और नागौर क्षेत्रों के निवासी मारवाड़ीङ में अपनी बात दूसरे व्यक्ति को बोलकर कहते हैं तथा दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर समझते हैं।

अतः भाषा का वह रूप जो एक सीमित क्षेत्र में बोला जाए, उसे बोली कहते हैं। कई बोलियों तथा उनकी समान बातों से मिलकर भाषा बनती है। बोली व भाषा का बहुत गहरा संबंध है।

भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली कहलाता है। अर्थात् देश के विभिन्न भागों में बोली जाने वाली भाषा बोली कहलाती है और किसी भी क्षेत्रीय बोली का लिखित रूप में स्थिर साहित्य वहाँ की भाषा कहलाता है।

व्याकरण :

मनुष्य मौखिक एवं लिखित भाषा में अपने विचार प्रकट कर सकता है और करता रहा है किन्तु इससे भाषा का कोई निश्चित एवं शुद्ध स्वरूप स्थिर नहीं हो सकता। भाषा के शुद्ध और स्थायी रूप को निश्चित करने के लिए नियमबद्ध योजना की आवश्यकता होती है और उस नियमबद्ध योजना को हम व्याकरण कहते हैं।

व्याकरण में भाषा से संबधित नियम होते हैव्याकरण से भाषा |व्याकरण एक प्रकार का शास्त्र भी है | की शुदधता का ज्ञान होता है|

- **परिभाषा**

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा किसी भी भाषा के शब्दों और वाक्यों के शुद्ध स्वरूपों एवं शुद्ध प्रयोगों का विशद ज्ञान कराया जाता है।

- **भाषा और व्याकरण का संबंध**

कोई भी मनुष्य शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना प्राप्त नहीं कर सकता। अतः भाषा और व्याकरण का घनिष्ठ संबंध हैं। व्याकरण भाषा में उच्चारण, शब्दप्रयोग-, वाक्यगठन तथा अर्थों के प्रयोग के रूप को - निश्चित करता है।

भाषा और व्याकरण का संबंधकोई भी मनुष्य शुद्ध भाषा का पूर्ण ज्ञान व्याकरण के बिना प्राप्त नहीं कर - सकता। अतः भाषा और व्याकरण का घनिष्ठ संबंध हैं वह भाषा में उच्चारण, शब्दप्रयोग-, वाक्यगठन तथा अर्थों के - -व्याकरण के चार अंग निर्धारित किये गये हैं -प्रयोग के रूप को निश्चित करता है।व्याकरण के विभाग ‌ज्व्याकरण के विभाग -व्याकरण के चार अंग निर्धारित किए गए हैं -

व्'याकरणअध्ययन की सुविधा के लिए व्याकरण को तीन |भाषा के मानक रूप को स्थिर बनाता है ' |भागो में बाँटा गया है

१. **वर्ण**इसमें वर्णों के आकार - **विचार-**, भेद, उच्चारण, और उनके मिलाने की विधि बताई जाती है।
२. **शब्द**इसमें शब्दों के भेद - **विचार-**, रूप, व्युत्पति आदि का वर्णन किया जाता है।
३. **पद**इसमें पद तथा उसके भेदों का वर्णन किया जाता है। - **विचार-**४. वाक्यइसमें वाक्यों के भेद - विचार-, वाक्य बनाने और अलग करने की विधि तथा विरामचिह्नों का वर्णन किया जाता है।-

- **लिपि :**

किसी भी भाषा के लिखने की विधि को ‌घलिपि‌ङकहते हैं। हिन्दी और संस्कृत भाषा की लिपि का नाम देवनागरी है। अंग्रेजी भाषा की लिपि ‌घरोमन‌ङ, उर्दू भाषा की लिपि फारसी, और पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है।

विश्व भर की भाषाएँ भिन्नभारत में हिंदी भाषा को देवनागरी लिपि |भिन्न लिपियों में लिखी जाती है - उर्दू |में लिखा जाता हैं भाषा की लिपि फारसी है अंग्रेजी भाषा की लिपि रोमन हैं तथा पंजाबी की लिपि | |गुरुमुखी हैं

देवनागरी लिपि की निम्न विशेषताएँ हैं -
(i) यह बाएँ से दाएँ लिखी जाती है।
(ii) प्रत्येक वर्ण की आकृति समान होती है। जैसेक -, य, अ, द आदि।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती हैवैसी लिखी जाती है।

- **साहित्य :**

ज्ञानराशि का संचित कोश ही साहित्य है। साहित्य ही किसी भी देश-, जाति और वर्ग को जीवंत रखने काउसके अतीत रूपों को दर्शाने का एकमात्र साक्ष्य होता है। यह मानव की अनुभूति के विभिन्न पक्षों को - स्‌पष्ट करता है और पाठकों एवं श्रोताओं के हृदय में एक अलौकिक अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति उत्पन्न करता है।

मानक भाषा-:

एक ही वर्ण |कभी वर्णो के लिखने के ढंग में परिवर्तन होने लगता है-साथ कभी-भाषा के विश्वास के साथ वर्णो का एक |दो प्रकार से लिखा जाने लगता हैबनाएँ रखने के लिए इन वर्णो का एक निश्चित रूप निर्धारित करना आवश्यक हो जाता है ,भाषा का एक बनाए रखने के लिए भाषाविदों ने भाषा के जिस रूपको स्वीकारा है | ' वहमौखिक भाषा| कहलाती है ''

सन्दर्भ

१. चटर्जी, डॉ॰ सुनीति कुमार जनवरी)२००२). सिंधी जैन ग्रन्थमाला, ग्रंथांक ३९, १९५३ (लेख का शीर्षकपण्डित दामोदर - भारतीय विद्याभवन :मुम्बई ."प्रकरण-व्यक्ति-उक्ति" विरचित,.
२. हिन्दी का संक्षिप्त व्याकरण : लेखक - श्री नारायण प्रसाद
3. "हिन्दी व्याकरण का काल विभाजन : एक दृष्टि", पृ.46 ; प्रकाशन विवरण हेतु देखें सन्दर्भ 31.
४. हिन्दी व्याकरण (पीडीएफ्)
५. हिन्दी भाषा का प्रथम व्याकरण